फरीदाबाद
मजदूर समाचार
राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया
नई सीरीज नम्बर 220 अक्टूबर 2006

प्रगति–विकास

भारत में सड़क दुर्घटनाओं में हर रोज 120 लोग मरते हैं और 1200 गम्भीर रूप से घायल होते हैं– 40 वर्ष से कम आयु वालों की हत्या करने में सड़कें नम्बर एक हैं। और, विश्व में बीमारियों पर औसतन लोगों का आमदनी का आधा खर्च होता है।

कुछ मोटा-मोटी बातें

★ मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन दस्तकारी- किसानी की मौत लिये है। दो सौ साल पहले भाप- कोयला आधारित मशीनों वाली फैक्ट्रियों ने इंग्लैण्ड में दस्तकारों- किसानों को मारा। यूरोप के बाकी क्षेत्रों में यह दोहराया गया।

★ मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन द्वारा दस्तकारी- किसानी की हत्या से तबाह दस्तकारों- किसानों के एक हिस्से को मजदूरों में बदला और दूसरे हिस्से को अमरीका- आस्ट्रेलिया खदेड़ दिया गया। यूरोप से बड़े पैमाने पर निकाले- निकले लोग अमरीका- आस्ट्रेलिया वासियों के लिये मौत के वाहक बने।

★ इंग्लैण्ड- यूरोप से पसरता- फैलता मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन सम्पूर्ण पृथ्वी पर छा गया है। एशिया- अफ्रीका- दक्षिणी अमरीका में जंगलवासी, पशुपालक, दस्तकार, किसान कई पीढियों से सिर पर मंडराती मौत से रूबरू हैं। करोड़ों नहीं बल्कि अरबों की सँख्या में तबाह इन लोगों का एक हिस्सा मजदूरों में बदला है और बाकी हिस्सा झटके- पटके खाता तिनकों से लटका है।

★ मनोरंजन, चिकित्सा, दुकान जैसे क्षेत्रों में मजदूरी- प्रथा के प्रवेश ने भाँति- भाँति के मजदूर पैदा किये हैं। यूरोप में तेजी से बढे और फिर गायब हुये दुकानदारों वाली प्रक्रिया आज बाकी दुनियाँ में दोहराई जा रही है।

★ मजदूर लगा कर मण्डी के लिये उत्पादन में कम से कम लागत पर अधिक से अधिक उत्पादन का सिलसिला लगातार चलता है। नई- नई मशीनें..... भाप- कोयले का स्थान तेल- बिजली ने लिया और इधर इलेक्ट्रोनिक्स का ताण्डव। इन दो सौ वर्षों में उत्पादन छलाँगों में बढा है परन्तु कुल मजदूरों की सँख्या धीमी गति से बढी है।

★ मण्डी में मुद्रा शक्ति का एक प्रतीक तो है ही, मण्डी के दबदबे के दौर में पैसे साँस लेते रहने के लिये जरूरी भी हैं। इधर करोड़ों तबाह दस्तकार- किसान बिकने के लिये मण्डी में भीड़ लगाये हैं और कम्प्युटर- उपग्रह- इलेक्ट्रोनिक्स बड़ी सँख्या में मजदूरों को बेरोजगार कर पुनः बिकने के लिये मण्डी में धकेल रहे हैं। इन्सान का भाव टके सेर हो गया है। एक तरफ "पैसे के लिये कुछ भी करेगा" और दूसरी तरफ शरीर में बारूद लपेट कर मरना- मारना इन हालात की उपज हैं।

★ विभिन्न चोलों में भीख माँगने व अन्य प्रकार के लम्पट कहे जाते पेशों में धकेले गये लोगों की सँख्या भारत में ही करोड़ों में हो गई है। कई क्षेत्रों में शहरों- कस्बों में गली- गली में और रेहड़ी- पटरी पर दुकानों की भरमार। गाँवों में भी बढती सँख्या में रिहाइशें गैरकानूनी! पेशे गैरकानूनी, कार्यस्थल गैरकानूनी, रिहाइशें गैरकानूनी.... यह एशिया- अफ्रीका- दक्षिण अमरीका में ही नहीं बल्कि यूरोप- उत्तरी अमरीका- जापान में भी वजनदार हैं, बढते जा रहे हैं।

★ मण्डी- मुद्रा के दबदबे और इससे जुड़े दमन- शोषण के खिलाफ जन असन्तोष को आत्मघाती राहों पर धकेलने के लिये नेता- ज्ञानी- ध्यानी दिन- रात एक किये हैं। एक तरफ जाति, धर्म, रंग, भाषा, क्षेत्र, कबीला, देश, राष्ट्र आदि आधारित पहचान की राजनीतियों को खूब खुराक दी जा रही है तो दूसरी तरफ "मैं" में सिमटने की घुट्टी पिलाई जा रही है। भाँति- भाँति की पहचान की राजनीति के जरिये व्यापक स्तर पर रक्तपात को संगठित कर, खबर बना कर सरकारें और उनके संघ "शान्तिदूत" बनते हैं। खुद को काटने, निकट जनों को पीड़ा पहुँचाने, पड़ोसियों- सहकर्मियों से तनाव, बढ़ता अकेलापन जनित "मैं" के रोगों के लिये पीड़ितों को ही दोषी ठहराने वाले मनोचिकित्सकों- प्रवचनकर्ताओं की भीड़ लगी है।

★ दो सौ वर्ष पूर्व इंग्लैण्ड में फैक्ट्री- पद्धति के खिलाफ मरने- मारने पर उतारू दस्तकारों- किसानों को कुचल दिया गया था। दिहाड़ी की दासता से मुक्ति के लिये मजदूरों के संघर्षों को यूरोप- उत्तरी अमरीका में 70- 80 वर्ष पहले कथित तौर पर दफना दिया गया था। परन्तु दस्तकारों- किसानों, मजदूरों और अन्य तबाह लोगों का विश्व- व्यापी स्तर पर मरने- मारने को उतारू होते जाना दुनियाँ- भर में सरकारों को आतंकित किये है। हर व्यक्ति बम बनी है! सारतः यह मजदूरों, किसानों और अन्य पीड़ितों का असन्तोष- आक्रोश है जिससे निपटने के लिये इसे एक अज्ञात, अदृश्य, निर्दयी, निर्मम, भयावह खतरा करार दे कर आतंकवाद के तौर पर प्रचारित किया जा रहा है। स्वयं आतंकी- आतंकवाद की कर्ता हर देश की सरकार आज आतंकित है। सब सरकारें मजदूरों- किसानों- तबाह लोगों के "आतंकवाद" के खिलाफ जोर- शोर से एकजुट हो रही हैं। निकट भविष्य में यह आतंकवाद और आतंकवाद- विरोध बहुत तेजी से बढते दिखते हैं।

★ हालात विश्व- भर में व्यापक जनसमूहों की स्थिति के बद से बदतर होते जाने की हैं। ऐसे में जनता को आत्मघात की राहों पर धकेलने के लिये सरकारों और सरकार बनाने को आतुर गिरोहों द्वारा प्रायोजित- नियन्त्रित मार- काट बढेगी। लेकिन संग ही संग मात्र बने रहने के लिये, अपने अस्तित्व के लिये आम लोगों द्वारा सरकारों के खिलाफ दंगे, विद्रोह, बगावतें तेजी से बढने के आसार हैं। दमन में और भयावह वृद्धि! वैसे, वर्तमान से पार पाने के लिये, संसार- भर में भाँति- भाँति के प्रयास बढते जा रहे हैं। इसलिये दिहाड़ी की दासता से मुक्ति के लिये, ऊँच- नीच से छुटकारे के वास्ते स्थानीय के संग- संग दुनियाँ के पैमाने पर संगठित प्रयासों के लिये तालमेलों को बढाने में तेजी लाना एक अनिवार्य आवश्यकता है। तालमेलों में आती बाधाओं से पार पाने के लिये तौर- तरीकों पर मन्थन जरूरी लगता है – हावी भाषा की जगह अलग भाषाओं की जरूरत लगती है। और, मण्डी के लिये उत्पादन के विकल्प की राहें, फैक्ट्री- पद्धति के विकल्प की राहें प्रकृति से सामंजस्य स्थापित करने की राहों से जुदा नहीं हो सकती।■

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद–121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

दर्पण में चेहरा-दर-चेहरा

चेहरे डरावने हैं.... आईना ही नहीं देखें या फिर हालात बदलने के प्रयास करें?

मितासो ऑटोलेक मजदूर : "प्लॉट 63 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 25 स्थाई मजदूरों और जुलाई 06 से नये ठेकेदारों के जरिये रखे 50 से ज्यादा वरकरों की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। चार पुराने ठेकेदारों के जरिये रखे 80 वरकरों और 100 कैजुअल वरकरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. अब भी नहीं हैं। हैल्परों को जुलाई 06 तक 8 घण्टे के 70 रुपये देते थे, अगस्त से 90 रुपये किये हैं। पेन्ट शॉप में प्रदूषण बहुत ज्यादा है — यहाँ काम करते 40 वरकर सब कैजुअल हैं। पेन्ट शॉप में 12½ - 12 घण्टे की ड्युटी है, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से और साल-डेढ साल में टी.बी. हो जाती है। प्रेस शॉप, टूल रूम, लेवलिंग डिपार्ट में 12-12 घण्टे की शिफ्ट। इधर पावर प्रेस पर एक वरकर की तीन उँगलियाँ कट गई। कम्पनी ने एक्सीडेन्ट रिपोर्ट नहीं भरी और प्रायवेट में इलाज करवा रही है। एक नये ठेकेदार ने पेन्ट शॉप वरकर के थप्पड़ मार कर उसे गेट बाहर कर दिया तो ठेकेदार की दादागिरी के खिलाफ पेन्ट शॉप वरकर गेट पर पहुँचे। ठेकेदार घबरा गया, वरकर को अन्दर ले लिया। फैक्ट्री में टाटा, अशोक लेलैण्ड, विक्रम, अतुल के ऑटो पार्ट्स बनते हैं। अगस्त की तनखा आज 14 सितम्बर तक नहीं दी है।"

वी. वी. इंजिनियरिंग वरकर : "12 इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं और सी एन सी मशीनें बन्द नहीं हों इसके लिये 3 लोगों की 8-8 घण्टे की भी शिफ्ट हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। हैल्पर की तनखा 1200 रुपये। पी.एफ. नहीं है, ई.एस.आई. काटने की बात है — सब वरकर कैजुअल हैं। फैक्ट्री में पीने का पानी गन्दा है जिससे पेट खराब हो जाता है और सब वरकर परेशान हैं।"

यामाहा मोटर मजदूर : "19/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में दो दर्जन ठेकेदारों के जरिये रखे 250 वरकर भी काम करते हैं। पहले ठेकेदार बदलते रहते थे पर मजदूर वही रहते थे लेकिन कम्पनी ने ठेकेदार बदलने के संग वरकर बदलने का सिलसिला चलाया और दस साल से अधिक समय से फैक्ट्री में लगातार काम कर रहे मजदूरों को निकाला गया। अब सिर्फ स्पेयर पार्ट्स विभाग में एक ठेकेदार के जरिये रखे हम 15 पुराने मजदूर बचे हैं। हमें डराते रहते हैं पर हम में आपस में तालमेल अच्छा है। फिर भी, असुरक्षा तो है ही। हम यूनियन को चन्दा देते थे, सात साल चन्दा लेने के बाद यूनियन ने पैसे वापस कर दिये। ऐसे में हम ने अपने हित में स्वयं कदम उठाने आरम्भ किये। तीन साल पहले हम ने एक सप्ताह काम बन्द किया तब हमारी तनखा में 700 रुपये बढाये गये, ओवर टाइम का भुगतान सिंगल की बजाय डबल की दर से करना माना, वर्ष में 12-14 सवेतन छुट्टियाँ और कार्यदिवस पर रोटी के 10 रुपये देने स्वीकार किये। फैक्ट्री में हर तीन महीने में डी.ए. का आंकड़ा आता है और स्थाई मजदूरों के वेतन में पैसे जुड़ते हैं पर हमारी तनखा में नहीं जोड़ते। तीन साल पहले की हमारी 2968 रुपये 20 पैसे तनखा में इस जनवरी में जा कर 30 रुपये बढाये हैं। वेतन से गुजारा नहीं..... हमारी अगल-बगल में कार्य करते स्थाई मजदूरों की तनख़ा 15000 रुपये है।"

परफैक्ट पैक वरकर : "प्लॉट 134 सैक्टर- 24 स्थित फैक्ट्री में गत्ता विभाग में हों चाहे पोलीमर यूनिट में, महिला मजदूरों की तनखा 1200-1500 रुपये और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। गत्ता विभाग में तो 300 में 65 स्थाई हैं पर पोलीमर यूनिट में 200 में एक भी परमानेन्ट मजदूर नहीं है। फैक्ट्री में 90 प्रतिशत मजदूरों को ठेकेदारों के जरिये रखा है।"

रेनसन इण्डिया मजदूर : "प्लॉट 9 सैक्टर-27 बी स्थित फैक्ट्री में रिकार्ड में वरकर पूरे नहीं दिखाये जाते। ओवर टाइम सिंगल रेट से दिया जाता है और यह भी दस्तावेजों में नहीं दिखाते। श्रम विभाग के अधिकारी आने पर मजदूरों को गेट बाहर कर दिया जाता है। हैल्पर को 10½ घण्टे की ड्युटी पर 2100 रुपये प्रतिमाह दिये जाते हैं। मजदूर का खर्चा चले या न चले फण्ड जबरदस्ती काटा जाता है। जब चाहें नौकरी से निकाल देते हैं और हिसाब तथा पी.एफ. फार्म भरवाने के लिये बीसियों चक्कर लगाने पड़ते हैं। फण्ड भी सिंगल मिलता है। खातों में बोनस दिखाते हैं पर मजदूरों को देते नहीं, पर्सनल वाले खा जाते हैं। तनखा तथा ओवर टाइम के घण्टों में गड़बड़ी करते हैं और जो खुले रुपये होते हैं उन्हें देते ही नहीं। सुपरवाइजर द्वारा ओवर टाइम पर रोके एक-दो घण्टे हो जाते हैं तब मैनेजर आ कर भगा देता है और उस समय के कोई पैसे नहीं देते। बदसलूकी, गालियाँ आम हैं। छुट्टी होने पर 15 मिनट बाद छोड़ते हैं पर भोजन के समय मजदूर हाथ अपने समय में धोयें। ई.एस.आई. की कच्ची पर्ची तब देते हैं जब उसकी तारीख खत्म हो जाती है। कार्य के दौरान गम्भीर चोट लगने पर पैसे की कमी बता कर थ्रीव्हीलर पर डॉक्टर के पास ले जाने में दो-तीन घण्टे लगा देते हैं। स्थाई मजदूरों की तनखा 2300 रुपये और 15 साल नौकरी वाले का हिसाब दस हजार रुपये बनाते हैं।"

एक्यूटैक्नो वरकर : "प्लॉट 209 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 1800 रुपये और ऑपरेटरों की 2000 रुपये से शुरू करते हैं। फैक्ट्री में काम करते 165 मजदूरों में से 3-4 को ही ई.एस.आई. कार्ड दिये हैं। सब के वेतन में से पी.एफ. की राशि काटते हैं पर लगता है कि भविष्य निधि कार्यालय में जमा नहीं करते — पी.एफ. की पर्ची नहीं। हद तो यह कर रखी है कि कार्य के दौरान चोट लगने पर कम्पनी प्रायवेट में इलाज करवाती है और उसके पैसे मजदूर की तनखा में से काट लेती है। अगस्त की तनखा आज 16 सितम्बर तक नहीं दी है।"

शिवालिक ग्लोबल मजदूर
मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में हम महिला मजदूरों को 8 घण्टे रोज पर 30 दिन के 1800 रुपये देते हैं। कुछ महिलाओं को 20 अगस्त को नौकरी से निकाल दिया पर उन्हें आज 13 सितम्बर तक तनखा नहीं दी है — ठेकेदार कल आना, कल आना कहता रहता है।

"शिवालिक ग्लोबल में 4 साल से लगातार काम कर रहे कुछ मजदूरों का एक साल बाद पी एफ. काटना शुरू किया था। इधर कम्पनी ने अपने आप ऐसे 20 मजदूरों के इस्तीफे लिखे और सितम्बर से उनकी नये सिरे से भर्ती दिखा कर उन्हें कच्चे मजदूर बना दिया है। उन वरकरों की अगस्त की तनखा में से भविष्य निधि की राशि नहीं काटी। साहबों ने उन्हें कहा है कि तीन महीने बाद फार्म भर कर पी.एफ. के पैसे निकाल लेना।

"विधायकों की समिति ने शिवालिक ग्लोबल फैक्ट्री में बाल मजदूर पाये... इधर कम्पनी ने दाढी-मूँछ नहीं काटने का आदेश दिया है।"

सेन्चुरी एन.एफ. कास्टिंग वरकर : "प्लॉट 1 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में काम करते 400 मजदूरों में से 5-6 ही स्थाई हैं और बाकी सब को ठेकेदारों के जरिये रखा है। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की — महीने के तीसों दिन। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। ई.एस.आई. कार्ड 6 महीने बाद देते हैं और पी.एफ. की पर्ची देते ही नहीं। बोनस नहीं देते। फैक्ट्री में बहुत गर्म काम है।"

श्याम टैक्स इन्टरनेशनल मजदूर : "प्लॉट 4 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती हैल्परों की तनखा 1850 रुपये। ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 2200 रुपये। ठेकेदारों के जरिये रखे नये कारीगर को 12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 2400 रुपये और पुराने कारीगरों को 2600-3000 रुपये। फैक्ट्री में 10-12 ठेकेदारों के जरिये रखे 2500 वरकरों में से 100 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। कम्पनी द्वारा स्वयं रखे 3000 मजदूरों में से 200 की ही ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं, लगातार 36 घण्टे भी रोक लेते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। फैक्ट्री में पीने के पानी की भारी समस्या है — 60 मजदूरों के विभाग में प्रतिदिन 20 लीटर पानी की कैन और बीच-बीच में वह भी नहीं। कैन्टीन में पीने के पानी की भारी किल्लत। फैक्ट्री में लैट्रीन बहुत-ही कम हैं और वो भी भरी पड़ी रहती हैं। चोट लगने पर मजदूर को अपने पैसों से इलाज करवाना पड़ता है। मास्टर और सुपरवाइजर बहुत गाली देते हैं।"

कानून हैं शोषण के लिये
छूट है कानून से परे शोषण की

कानून : ●37-40 दिन काम करने पर 30 दिन की तनखा, अगले महीने की 7-10 तारीख तक दे ही देना; ●8 घण्टे की ड्युटी, तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं, ओवर टाइम का भुगतान वेतन की दुगुनी दर से; ● हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा अकुशल मजदूर-हैल्पर के लिये 8 घण्टे की ड्युटी और महीने में 4 छुट्टी पर जुलाई 06 से 2484 रुपये 28 पैसे है, 8 घण्टे काम के लिये 95 रुपये 55 पैसे; अर्धकुशल के 2594 रुपये 28 पैसे; कुशल के 2744 रुपये 28 पैसे; उच्च कुशल के 3044 रुपये 28 पैसे। जुलाई से डी.ए. के 36 रुपये 96 पैसे आये हैं।

टी.एस. किसान मजदूर : "प्लॉट 8 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। रविवार को दिन में 8 घण्टे। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

टैक्नो लाइन्स वरकर : "ओल्ड स्टेशन के सामने भाटिया क्रेन वाली गली में स्थित फैक्ट्री के रात 11 बजे बाहर से ताला लगा देते हैं जबकि अन्दर काम होता रहता है। हैल्पर को 12 घण्टे प्रतिदिन पर 30 दिन के 2250 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. किसी मजदूर के नहीं हैं। फैक्ट्री में पीने का पानी गन्दा है।"

पूनम रबड़ मजदूर : "प्लॉट 14 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में महिला मजदूरों को कम्पनी ने स्वयं रखा हो चाहे ठेकेदार के जरिये रखा हो, उनकी तनखा 1200-1300 रुपये। फैक्ट्री में काम करते 200 मजदूरों में से अधिकतर की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं। कम्पनी द्वारा स्वयं रखों की ड्युटी 8½ घण्टे की और ठेकेदारों के जरिये रखों की 12 घण्टे। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

अशोका प्लास्टिक इन्डस्ट्रीज वरकर : "प्लॉट 101 सौ फुट रोड़ चावला कॉलोनी स्थित फैक्ट्री वहीं स्थित भगवती सेल्स कोरपोरेशन से जुड़ी है। हैल्परों की तनखा 1500 रुपये। दो शिफ्ट 12-12 घण्टे की। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। ई.एस.आई. नहीं, पी. एफ. नहीं। एक कप चाय भी 12 घण्टे में नहीं देते और बीमारी की वजह से अनुपस्थित होने पर अगले दिन गालियाँ।"

बिड़ला वी एक्स एल मजदूर : "14/5 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में कैजुअल वरकरों को हर रोज जबरदस्ती 16 घण्टे रोकते हैं। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से बताते हैं और जून से किये ओवर टाइम के पैसे आज 18 सितम्बर तक नहीं दिये हैं। अगस्त की तनखा भी आज 18 सितम्बर तक नहीं दी है।"

जैनेन्द्रा इन्डस्ट्रीज वरकर : "प्लॉट 116-7 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में 45 स्थाई मजदूर और तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 325 वरकर अल्युमिनियम की ढलाई करते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 1900 और ऑपरेटरों की 2000-2200 रुपये। फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्टें, महीने के तीसों दिन और रिलीवर नहीं आने पर लगातार 36 घण्टे ड्युटी। ओवर टाइम के पैसे सिंगल दर से। फैक्ट्री में कैन्टीन नहीं है। मैनेजर गाली भी देता है।"

एस पी एल इन्डस्ट्रीज मजदूर : "प्लॉट 22 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 50-60 ठेकेदारों के जरिये रखे 1500 वरकरों की महीने के तीसों दिन 12-12 घण्टे ड्युटी – रविवार को तो ज्यादा ही जबरदस्ती करते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। छुट्टी देते ही नहीं, गाली देते हैं। अगस्त की तनखा ठेकेदारों के जरिये रखों को 15-16 सितम्बर को दी।"

पैरामाउन्ट रबड़ मजदूर : "प्लॉट 58 बी इन्ड. एरिया स्थित फैक्ट्री में दस ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों की तनखा 1800 रुपये और ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं। ड्युटी 10 घण्टे की और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

दिल्ली से –

डी.ए. के 41 रुपये जुड़ने के बाद अब दिल्ली में 8 घण्टे की ड्युटी और हफ्ते में एक छुट्टी पर कम से कम तनखा हैल्पर की 3312 रुपये (8 घण्टे के 127 रुपये 40 पैसे); अर्ध-कुशल श्रमिक की 3478 रुपये (8 घण्टे के 133 रुपये 80 पैसे); कारीगर की 3736 रुपये (8 घण्टे के 143 रुपये 70 पैसे)। स्टाफ में कम से कम तनखा अब मैट्रिक से कम की 3505 रुपये; मैट्रिक पास परन्तु स्नातक से कम की 3760 रुपये; स्नातक एवं अधिक की 4072 रुपये।

थीम इण्डिया मजदूर : "बी-313 (बेसमेन्ट) ओखला फेज-1 स्थित फैक्ट्री में तीन ठेकेदारों के जरिये रखे 120 वरकरों में किसी की भी ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं। हैल्पर की तनखा 1800-2400 रुपये। कारीगर पीस रेट पर रखते हैं – कभी दिहाड़ी लगाते हैं तब 8 घण्टे के 120 रुपये। कम्पनी द्वारा स्वयं रखे 13 मजदूरों को दिल्ली सरकार का ग्रेड दिया जाता है। सुबह 9 से साँय 6½ की शिफ्ट है, रात 8-9 बजे तक रोकते हैं और नाइट लगने पर रात एक बजे तक। ओवर टाइम का भुगतान सिंगल रेट से। कार्यस्थल पर भारी गर्मी रहती है – बेसमेन्ट में मात्र 15 पँखे हैं जबकि 50 होने चाहियें। कार्यस्थल पर रौशनी बहुत कम है – दो सिलाई मशीनों पर एक ट्यूब लाइट है। लैट्रीन-बाथरूम बदबू मारते हैं, अन्धेरा रहता है, लैट्रीन भरी पड़ी रहती हैं। पानी पीने के लिये कम्पनी के बाहर एक टोटी है। बीमारियों को देखते हुये कम से कम ई.एस.आई. तो होनी ही चाहिये।"

नाम किसी वरकर को नहीं पता : "बी-48 ओखला फेज-1 की बेसमेन्ट में दो महीने से काम कर रहे 160 मजदूरों को आज 15 सितम्बर को 80 कर दिया है। दो की जगह आज से एक शिफ्ट कर दी है। ई.एस.आई. व पी.एफ. 160 में किसी की नहीं। हैल्परों की तनखा 1800-2000 रुपये। पीस रेट पर कारीगर के 8 घण्टे के 100 रुपये मुश्किल से बनते हैं। बेसमेन्ट में रजाई-गद्दे बनते हैं। ऊपर की दो मंजिलों में काम करते मजदूरों के बारे में पता नहीं।"

कैजुअल वरकर (एस्कोर्ट्स)..... (पेज चार का शेष)

करना है तो करो नहीं तो हम एक मिनट में ब्रेक कर देते हैं। पेमेन्ट 10 तारीख को होती है, ओवर टाइम नहीं है।

"फार्मट्रैक कैन्टीन में अव्यवस्था का राज है। कभी चम्मच नहीं मिलती तो कभी सलाद खत्म हो जाती है। कच्ची रोटी मिलती हैं। कुछ लोग दादागिरी से लाइन के बीच में घुस जाते हैं। लाइन में एक-दूसरे से सट कर खड़े होते हैं – पैर दूसरों के पैरों से लगते रहें कोई परवाह नहीं करता, पसीना आता रहे, धक्काबाजी होनी हैं। फिर, खाना देने वाले ही पैसे लेते हैं सो खाना मिलने में और देर होती है। भोजन के दौरान पानी खुद जा कर पीना पड़ता है। कैन्टीन के गेट पर इतने जोर से धक्का-मुक्की होती है (गेट छोटा भी है) कि गेट खुलते ही बुरी तरह एक-दूसरे को रौंदते हुये अन्दर को भागते हैं। इसी के चलते अभी चार दिन पूर्व ही एक का हाथ टूटा है। इस सब के खिलाफ कोई कैजुअल बोलता है तो उसका ब्रेक कर दिया जाता है।

"एस्कोर्ट्स फार्मट्रैक में काम करते वक्त अगर पीस खराब हो जाता है या मशीन खराब हो जाती है तो कैजुअल का ब्रेक कर दिया जाता है। हाथ धोने के लिये परमानेन्ट को 2 डिब्बी क्रीम व 4 साबुन, कैजुअल को एक डिब्बी क्रीम व 2 साबुन। हम कैजुअलों को मैनेजर लोग गालियाँ भी देते हैं। इधर 8 घण्टे में फार्मट्रैक ट्रैक्टर 60 की जगह 80 बनाने के बदले में परमानेन्ट को तीन वर्ष में 4500 रुपये प्रतिमाह बढ कर मिलेगा जबकि कैजुअल का एक पैसा नहीं बढाया। कैन्टीन में खाने के दाम बढा दिये हैं – जहाँ 2 रुपये में चाय व 2 पकोड़े मिलते थे वहाँ अब 1½ रुपये की चाय व 3 रुपये का पकोड़ा मिलेगा।"

उड़ीसा से –

शाह ऑटोमोबाइल मजदूर : "बालिया बालेश्वर, उड़ीसा स्थित यह कम्पनी सुजुकी मोटरसाइकिल की बिक्री, सर्विस, रिपेयर का काम करती है। यहाँ काम करते 30 मजदूरों में हैल्परों की तनखा 500 रुपये और कारीगरों की 2500 रुपये। ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं। काम सुबह 9 बजे शुरू होता है और रात 10½ से पहले बन्द नहीं होता। एक बाइक की दिन में चार बार सफाई करनी होती है। बाइक को उतारने, चढाने का काम भी करना होता है। वेतन माँगने पर साहब कम सेल की बात करते हैं।"

महीने में एक बार छापते हैं, 5000 प्रतियाँ फ्री बाँटते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें।

ओल्ड स्टेशन पर दँगा

दैनिक यात्री : "दिल्ली की तरफ के लिये 7.55 वाली मथुरा शटल, 8.15 वाली बल्लभगढ और 8.35 वाली पलवल शटल में से कोई भी 8.35 तक न्यू टाउन स्टेशन पर नहीं पहुँची। प्लेटफार्म यात्रियों से खचाखच भर गया। बल्लभगढ शटल 8.40 पर आई तो भारी धक्का-मुक्की हुई और काफी लोग छूट गये। यह ट्रेन ओल्ड के एक नम्बर प्लेटफार्म पर आधी ही पहुँची थी कि जनता ने गाड़ी रोक कर ड्राइवर को नीचे उतार दिया। आगे का शीशा तथा हैडलाइट तोड़ कर डिब्बों के शीशे तोड़े गये तो गाड़ी में सवार सभी यात्री नीचे आ गये और पत्थर फेंकने में शामिल हो गये। ओल्ड स्टेशन पर दैनिक यात्रियों की बीस हजार की भीड़ जमा हो गई थी। स्टेशन पर खड़ी एक मालगाड़ी के इँजन के शीशे भी तोड़ दिये। ऐसे में मुम्बई से दिल्ली आती राजधानी एक्सप्रेस को आउटर सिग्नल पर रोक दिया गया। सिग्नल तोड़ती भीड़ वहाँ पहुँची और राजधानी के शीशे तोड़े। एक केन्द्रीय गृह राज्य मन्त्री भी राजधानी एक्सप्रेस में था। पुलिस थी पर जहाँ इतनी पब्लिक हो वहाँ 10-20 पुलिसवाले क्या करेंगे? डण्डे चलाती तो पुलिस खुद पिटती। फरीदाबाद की डी.सी. व एस.पी. और रेलवे एस.पी. भारी पुलिस बल के साथ स्टेशन पहुँचे, स्थिति सामान्य बनी।

"सुबह 6½ से 9½ तक 9 लोकल गाड़ियाँ हैं और इनमें आगरा तक से प्रतिदिन एक लाख से ऊपर दैनिक यात्री फरीदाबाद-दिल्ली फैक्ट्रियों-दफ्तरों-दुकानों में नौकरी करने आते हैं। लोकल ट्रेनों में भीड़ बहुत-ही ज्यादा होती है। इतना बुरा हाल होता है कि खड़े होने की जगह नहीं होती। एक डिब्बे में 500-700 लोग! बाहर लटके हुये कई बार सिग्नल से टकरा जाते हैं। चढने-उतरने में चोट लगती हैं, कई बार बहुत गम्भीर चोट। और, 8 घण्टे की ड्युटी 12-14 घण्टे की पड़ती है। ऊपर से रेल विभाग लोकल ट्रेन को रोक कर एक्सप्रेस और मालगाड़ी निकालता रहता है। इससे लोकल आधे घण्टे की जगह एक-डेढ घण्टा लगा देती है। देरी से पहुँचने पर डाँट-फटकार तो सब जगह मिलती हैं, फैक्ट्रियों से तो अक्सर वापस कर देते हैं। फिर, कल रात 8.10 पर ओखला पहुँचती लोकल गाड़ी रद्द कर दी गई। काफी ऊहापोह के बाद जम्मु से आती मालवा एक्सप्रेस को लोकल बनाया। राजधानी निकालने के लिये इसे 10 मिनट तुगलकाबाद रोका गया और सदर्न निकालने के लिये 20 मिनट ओल्ड पर रोका। लोकल से जहाँ 8.45 न्यू टाउन स्टेशन पहुँचते वहाँ मालवा से रात 10 बजे पहुँचे। इन हालात में दैनिक यात्री हर समय तनाव में रहते हैं।"

कैजुअल वरकर

एस्कोर्ट्स मजदूर : "प्लॉट 2 सैक्टर-13 स्थित प्लान्ट II (फार्मट्रैक) में कैजुअल 6 माह के लिये रखते हैं। नौकरी चेक लिस्ट पर हर महीने एक माह के लिये बढाई जाती है। आठ घण्टे के 144 रुपये और खाने के 7 रुपये मिलते हैं। छुट्टियों का पैसा कटता है। दो मशीनें चलानी पड़ती हैं। ई.एस.आई. कटता है, कार्ड नहीं देते। फण्ड कटता है मगर 6 महीने पूरे होने से पहले निकाल देते हैं, 180 दिन दिहाड़ी पूरी नहीं हो पाती सो फण्ड डबल नहीं मिलता। कम्पनी में कैजुअल के लिये चोट लगने पर फर्स्ट एड के अलावा इलाज की सुविधा नहीं। कम्पनी की बसों में 8-8 लोगों की जगह खाली जाती है पर कैजुअल को नहीं ले जा सकते। कम्पनी जूते देती नहीं और बगैर जूते पहने ड्युटी पर नहीं लेते। ड्युटी कार्ड आठ बज कर पाँच मिनट पर पर्सनल/टाइम आफिस द्वारा उठा लिये जाते हैं और उसके बाद आने वालों को ड्युटी पर नहीं लिया जाता। टाइम आफिस वाले कभी-कभी कार्ड नहीं लगाते तो वरकर पर्सनल वालों से कहते हैं जिस पर वो कहते हैं कि यहाँ है और ऐसे ही होता है, **(बाकी पेज तीन पर)**

गुड़गाँव में
नौजवान मजदूरों ने जोत जलाई

प्लॉट 1 सैक्टर-3 मानेसर, गुड़गाँव स्थित **होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर** कम्पनी, यूनियन तथा अतिरिक्त श्रमायुक्त व उपश्रमायुक्त द्वारा हस्ताक्षरित तीन वर्षीय समझौते पर गुड़गाँव के डी.सी. ने बधाई दी। सोमवार, 18 सितम्बर को यूनियन ने सभा कर मजदूरों को समझौते के बारे में बताया। ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे वरकर और अप्रेन्टिस सवाल उठाने लगे तब लीडरों ने यह कह कर सभा समाप्त कर दी कि कम्पनी ने मीटिंग के लिये 1½ घण्टा दिया था और दो घण्टे हो गये हैं, बाद में बात कर लें।

मंगलवार, 19 सितम्बर को ए-शिफ्ट में ड्युटी पर पहुँचते ही ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे वरकर और अप्रेन्टिस एक कैन्टीन में जा कर बैठ गये। मरने-मारने पर उतारू मजदूरों से बात करने की हिम्मत यूनियन लीडरों की नहीं हुई। कम्पनी ने कैन्टीन के बाहर से ताला लगा दिया, कैन्टीन का पानी काट दिया, बिजली काट दी। कम्पनी के तीसरा नेत्र होता तो वह विद्रोही मजदूरों को भस्म कर देती।

होण्डा कम्पनी ने फैक्ट्री के अन्दर ए-शिफ्ट के उन मजदूरों को तो बन्द कर दिया था पर उनके बी व सी-शिफ्ट के साथी बाहर थे। अखबार-टी वी वालों से सम्पर्क करने पर वे 25 जुलाई 05 के हँगामे को याद कर खबर के लिये फैक्ट्री पहुँचे। कम्पनी ने अखबार-टी वी वालों को फैक्ट्री के अन्दर नहीं जाने दिया और कहा कि 150 मजदूरों का ही मामला है। मोबाइल फोन पर बन्द वरकरों ने अपनी सँख्या 1200-1500 बताई। यूनियन के अनुसार 700 के करीब। झमेला देख कम्पनी ने कैन्टीन के लगाया ताला खोला। मजदूर कैन्टीन में बैठे रहे। ठेकेदार कम्पनी के जरिये रखे बी-शिफ्ट के मजदूरों तथा अप्रेन्टिसों को 19 सितम्बर को कम्पनी ने बी-शिफ्ट में फैक्ट्री के अन्दर नहीं जाने दिया। बी और सी-शिफ्ट के इन वरकरों ने फैक्ट्री गेट पर एकत्र हो कर नारे लगाना शुरू किया।

समझौते पर खुशी जाहिर करने वाले काँइयाँ श्रम अधिकारियों के हाथ-पाँव फूल गये। चण्डीगढ से श्रमायुक्त 20 सितम्बर को होण्डा फैक्ट्री पहुँचा। फैक्ट्री के अन्दर आये साहब से कम्पनी और यूनियन नहीं मिले! काम बन्द कर अन्दर डटे विद्रोही मजदूरों ने श्रमायुक्त से चार घण्टे बात की और निष्कर्ष निकाला कि यह साहब मजदूरों की स्थिति तथा रुख का जायजा ले आया था ताकि कम्पनी को वस्तुस्थिति से अवगत करा सके।

डी.सी. गुड़गाँव ने स्थिति को सामान्य बताया और होण्डा फैक्ट्री के अन्दर पुलिस बैठा दी। भूख से बेहोश होते मजदूरों को अस्पताल पहुँचाने के लिये डी.सी. ने होण्डा फैक्ट्री के अन्दर एक सरकारी एम्बुलैन्स भी खड़ी कर दी।

न्यायालय ने 22 सितम्बर को मजदूरों के विद्रोह को अवैध करार दिया और पुलिस व प्रशासन को उन्हें फैक्ट्री से निकालने तथा गेट वालों को 300 मीटर दूर खदेड़ने के आदेश दिये। आदेशों का पालन नहीं होने पर न्यायालय ने 23 सितम्बर को यही आदेश पुनः दिये।

यूनियन के नाकारा साबित होने पर कुछ यूनियन समर्थकों ने विद्रोही मजदूरों को टटोलने, समझाने और इनमें से "भड़काने वालों" को छाँटने व अलग-थलग करने के लिये पापड़ बेले।

24 सितम्बर को बगावत ठण्डी हुई।

थोड़े ही समय में जगह–जगह के अनुभवों से लैस हो कर होण्डा फैक्ट्री पहुँचे और वहाँ विद्रोह करने वाले इन नौजवान मजदूरों को हम सलाम करते हैं!

पिछले वर्ष होण्डा मोटरसाइकिल एण्ड स्कूटर कम्पनी में 1200 स्थाई, 1600 ट्रेनी, 1000 ठेकेदार के जरिये रखे और 400 अप्रेन्टिस थे। जुलाई 05 के हँगामे के बाद कम्पनी ने नये ट्रेनी नहीं रखे हैं। अब फैक्ट्री में 1600 स्थाई, 500-600 ट्रेनी और ठेकेदार के जरिये रखे तथा अप्रेन्टिस मिला कर 2000 के करीब लगते हैं। पिछले वर्ष होण्डा फैक्ट्री में मजदूरों के अनुसार सबसे बड़ी समस्या काम-काम-काम और काम थी। इधर कम्पनी-यूनियन तीन वर्षीय समझौते में उत्पादन डेढ-दो गुणा करने के लिये स्थाई मजदूरों की तनखा बढाने के संग इनसेन्टिव के दाने डाले गये हैं। गुडईयर टायर के एक अनुभवी मजदूर के अनुसार इनसेन्टिव के फेर में होश खो कर पहलेपहल मजदूर गुड़ में चिपट जाते चींटे की तरह हो जाते हैं। विद्रोह के दौरान होण्डा फैक्ट्री में स्थाई मजदूर उत्पादन कार्य करते रहे। (जानकारियाँ छिटपुट में इधर-उधर से ली हैं।)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233** पोस्टल रजिस्ट्रेशन **L/HR/FBD/73**